UDGAM VIGYATI, VOLUME 2, 2015, (NOVEMBER)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 134-135

"वर्तमान प्रबंधन शिक्षा में भारतीय जीवन मूल्य –एक अध्ययन"

डॉ. जे.एस. मण्डलोई
सहायक प्राध्यापक वाणिज्य
बी.एल.पी. शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महू

सारांश
जीवन ईश्वर का दिया हुआ अनमोल वरदान है। इस ईश्वरदत्त जीवन के लिये शिक्षा अति महत्वपूर्ण है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल एक बार सीखना नही हैं, बल्कि यह जीवन भर सीखते रहने का उपक्रम है।शिक्षा समृद्धि में अभूषण, विपत्ति में शरण स्थान और समस्त कालों में आनन्द स्थान होती है। ''शिक्षा मनुष्य में पहले से ही छिपी हुई पूर्णत को प्रकट करने का माध्यम है'' – स्वामी विवेकानंदजी के अनुसार। मनुष्यों को सही अर्थों में मनुष्य बनाने के लिये शिक्षा को सर्वाधिक अवश्यक मनाते हुए महान दार्शनिक एवं शिक्षाविद् डॉ. राधा कृष्णन् कहते है कि –''शिक्षा वह है, जो मनुष्य को ज्ञान प्रदान करने के साथ–साथ उसके हदय एवं आत्मा का विकास करती है शिक्षा व्यक्ति को स्वयं के विकास के साथ–साथ समाज और राष्ट्र के विकास के लिए भी प्रेरित करती है। शिक्षा मनुष्यों को एक विशिष्ट जीवन पद्वति को जीने के लिये तैयार करने का उपकरण है,जो मनुष्य अपने जीवन के प्रत्येक स्तर के समय–समय पर अपनी भूमिका निभाता रहता है।

जीवन ईश्वर का दिया हुआ अनमोल वरदान है। इस ईश्वरदत्त जीवन के लिये शिक्षा अति महत्वपूर्ण है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल एक बार सीखना नही हैं, बल्कि यह जीवन भर सीखते रहने का उपक्रम है।शिक्षा समृद्धि में अभूषण, विपत्ति में शरण स्थान और समस्त कालों में आनन्द स्थान होती है।

''शिक्षा मनुष्य में पहले से ही छिपी हुई पूर्णत को प्रकट करने का माध्यम है''

– स्वामी विवेकानंदजी के अनुसार।

मनुष्यों को सही अर्थों में मनुष्य बनाने के लिये शिक्षा को सर्वाधिक अवश्यक मनाते हुए महान दार्शनिक एवं शिक्षाविद् डॉ. राधा कृष्णन् कहते है कि –''शिक्षा वह है, जो मनुष्य को ज्ञान प्रदान करने के साथ–साथ उसके हदय एवं आत्मा का विकास करती है शिक्षा व्यक्ति को स्वयं के विकास के साथ–साथ समाज और राष्ट्र के विकास के लिए भी प्रेरित करती है। शिक्षा मनुष्यों को एक विशिष्ट जीवन पद्वति को जीने के लिये तैयार करने का उपकरण है,जो मनुष्य अपने जीवन के प्रत्येक स्तर के समय–समय पर अपनी भूमिका निभाता रहता है।

वर्तमान समय में शिक्षा के उचित प्रबंधन का भारी अभाव देखने को मिल रहा है। समाज में व्यक्ति को शिक्षित करने के उद्देश्य में परिवर्तन होने के साथ ही शिक्षा का व्यवहारिक उद्देश्य भी बदल चुका है। भौतिकतावादी संरचना में शिक्षा एक व्यवसाय के रूप में मूल्यांकित होने लगा है। बढ़ती हुई जनसंख्या के दबाव के कारण शिक्षा को सुसंस्कारित, कौशल आधारित एवं रोजगार परक शिक्षा का प्रबंधन करना अति अवश्यक है। विद्यार्थीयों को विद्यालय स्तर से ही सुसंस्कारित एवं कौशल तथा रोजगार परक शिक्षा की आवश्यकता है। तभी हम अपने देशवासियों व देश का सुसज्जित विकास कर पायेगें।

UDGAM VIGYATI, VOLUME 2, 2015, (NOVEMBER)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 134-135

वर्तमान शिक्षा अपने उद्देश्यों को पूरा करने में सफल नहीं है स्वामी विवेकानंदजी ने मैकाले की शिक्षा पद्वति का विरोध करते हुए लिखा है –'' शिक्षा की वर्तमान व्यवस्था ''बाबू'' पैदा करने की मशीन के सिवाय कुछ नही है। हमारे शिक्षा शास्त्री हमारे बच्चों को केवल तोता बना रहे है और रटा–रटा कर उनके मस्तिष्क में कई विषय भरते जा रहे है। उनका मानना था कि इस प्रकार शिक्षा प्राप्त कर नौकारी के लिये दफतरी खाक छानने की बजाय थोड़ी सी तकनीकी शिक्षा प्राप्त की जायें ताकि रोजगार पाकर अपना व परिवार का पेट पाल सकें।''

महात्मा गांधी ने कहा था –*उद्योग ही शिक्षा का केन्द्र होना चाहिए। उन्होंने बुनियादी शिक्षा को महत्व दिया।*

पण्डित जवाहरलाल नेहरू के अनुसार –''बुनियादी शिक्षा के पश्चात् की शिक्षा के लिये किसी महाविद्यालय या विश्वविद्यालय, में जाना आवश्यक नही अपितु अच्छे किसान, अच्छे दुकानदार, अच्छे काश्तकार बनने के लिये अन्यत्र जा सकते है। लेकिन जो समर्थ है, उन्हें उच्चतर वैज्ञानिक, इंजीनियरी या डॉक्टरी जैसे प्रशिक्षण के लिये जाना चाहिये।

वर्तमान समय में शिक्षा के विभिन्न आयाम मौजूद है, किन्तु उनका समय पर उचित प्रबन्धन का नहीं होना एवं शिक्षकों को अधिकांश समय तक गैर शिक्षकीय कार्यो में संलग्न किये जाने के कारण हम हमारे भारतीय विद्यार्थियों के जीवन को आदर्श रूप नहीं दे पाते। जिसका परिणाम आज हमें बेरोजगार, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, दुःशासन, दुःप्रशासन, असंस्कारित, लुटपाट, चौरी, डकैती, हत्याओं के रूप में देखने को मिल रहा है। इन सबके मूल में मूल्यपरक शिक्षा एवं वर्तमान शिक्षा के उचित प्रबन्धन के अभाव का होना है।

शिक्षा व्यवस्था को ऐसा रूप दिया जाय कि वह आज की एवं भविष्य की चुनौतियों का सामना करने लायक बन सकें। अतः सार रूप में कहा जा सकता है कि शिक्षकों को शिक्षक रहने दिया जाए और वर्तमान प्रबंधन शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन कर शिक्षा पाने वाले मानव को इन्सान बनाने लायक शिक्षा पद्धति अपनायी जाये जिसके दूरगामी परिणाम सकारात्मक एवं सुखद प्राप्त होगें।

संदर्भ ग्रंथ –

1 शिक्षा दर्शन – ' शर्मा रामनाथ एवं राजेन्द्रकुमार
2 नीतिशास्त्र के मूल सिद्धांत – वर्मा वेद प्रकाश
3 शैक्षिक समाज शास्त्र – शर्मा रामनाथ एवं राजेन्द्र कुमार
4 उदयीमान भारत में शिक्षा –त्यागी डॉ. गुरसरम दास नंद, डॉ. विजय कुमार